Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 4.94 ISSN No. 2456-1665

नारी मुक्ति - संघर्ष के स्वर

डॉ. दत्तात्रय फुके
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राजर्षी शाहू महाविद्यालय पाथ्री, तहसील–फुलंब्री
जिला–औरंगाबाद–431111 (महाराष्ट्र)
मो. 09637174444
drdnphuke@gmail.com

अत्यंत अवसाद के साथ कहना पड़ रहा है कि युग-युगान्तरों से उत्थान-पतन की तरंगों में झूलती हुई भारतीय नारी को कभी सम्मान का स्वर्णिम कगार मिला तो कभी पतन की मझधार ! भारतीय संस्कृति में इसे सम्मान के सर्वोच्च शिखर पर बिठा कर कभी अर्धनारीश्वर के रूप में, कभी लक्ष्मी तो कभी सरस्वती बनाकर देवी के रूप में पूजा गया | किन्तु समय के चक्र में नारी का सम्मान पीछे छूटने लगा और इसे देवी की जगह पशु से भी बदतर समझा जाने लगा | और फिर इसके प्रति अत्याचारों का सिलसिला आरम्भ हुआ | इससे मानवोचित अधिकारों को छीना जाने लगा | इसकी स्थिति दिन पर दिन दूभर होती जा रही थी | अब ऐसी स्थिति में नारी स्वयं को कमज़ोर व हीन मानने लगी | अपनी रक्षा का और भरण-पोषण का भार क्रमशः पिता, पति और पुत्र पर सोपने लगी और ऐसे में पित्रसत्तात्मक समाज का वर्चस्व और अधिक सुदृढ़ होने लगा, इसीलिए नारी अनाचार व काम-वासना का शिकार बनकर पीड़ित बनी |भारतीय समाज के अन्तरविरोधो के बारे में प्रो. प्रतिभा मुदलियार लिखती है **"भारतीय समाज में स्री की स्थिति अन्तरविरोधो से भरी हुई है | परम्परा से नारी को शक्ति का रूप माना गया है, पर आम बोलचाल में उसे अबला कहा जाता है | भारतीय समाज में स्री की इस विरोधाभासपूर्ण स्थिति की अनुगूंज ऋग्वेद की ऋचाओ से हि प्रारम्भ हो जाती है जिसमें कहीं तो उसे अत्यंत श्रेष्ठ मानते हुए पूज्य बताया गया है, तो कहीं कामवासना का मूर्त रूप मानते हुए मुक्ति मार्ग में बाधक, त्याज्य और मुर्ख | हमारे भारतीय समाज में आदिकाल से ही, पुरुष, नारी-शक्ति स्वरुप देवी की पूजा-अर्चना, 'या देवी सर्वभूतेषु' के मंत्रोच्चारण से करते आ रहे हैं; लेकिन जब किसी औरत के मान-मर्यादा की बात आती है, तब वे बिदक जाते हैं | यह दोहरापन हमारे समाज में मौजूद है, जहाँ नारी को घर की सजावट और पुरुषों के मन बहलाने का खिलौना माना गया है |"**[1] काम-वासना का शिकार हुई नारी की अंतर्व्यथा जो अमृता प्रीतम के शब्दों में कही गयी है–

"काया की हक़ीकत से लेकर,
काया की आबरू तक मैं थी |
काया के हुस्न से लेकर,
काया के इश्क़ तक तू था...|"[2]

चूँकि नारी भी एक सामाजिक प्राणी है इसीलिए नारी की स्थिति किसी भी समाज की उन्नति-अवनति को दर्शाती है | फिर भी समाज के तथाकथित इज्जतदार पुरुषों ने इसे सदियों से गौण माना है और इसे अनेकानेक बंधनों में जकड कर इसे 'अबला' बनाया है | वर्षों से गुलाम बनी नारी आज... मुक्ति के लिए छटपटा रही है | सदियो से दबाई गई इसकी आवाज़ आज सशक्त स्वर-गंगा बनी है | नारी मुक्ति संघर्ष के स्वर आज सर्वत्र गूंज रहे हैं | नारी को अब हाशिये से हटा कर प्रतिभा की रौशनी

की तरफ लाया गया है | अब नारी लक्ष्मी-सरस्वती के रूप में नहीं बल्कि एक चंडी और काली के रूप में हैं | आज शिक्षा लेकर वह अत्याचारों का विद्रोह करने लगी है | आज इसे अपने अस्तित्व और अस्मिता का ज्ञान हो गया है | आज यह महसूस करने लगी है की स्वयं को कितने दिन पुरुषों पर निर्भर रखेगी...? कब तक यह मिसेस शर्मा या मिसेस आहूजा कहलाएगी...? कब तक ये समाज इसे बेटी, पत्नी, माँ के नाम पर पिता, पति और पुत्र के आधीन रखेगा...? नारी अब विचार-विमर्शों में जुट गयी है | इसकी अविरल विचार श्रृंखला में बार-बार कई बार अनेक सवाल उठते है...कब तक...आखिर कब तक...हमारे स्वतंत्र अस्तित्व के सूत्र पिता, पति और पुत्र के हाथ में रहेंगे..?

कामुक पुरुष की वृत्ति के कारण तब से अब तक स्त्री को घोर वेदनाये सहनी पड़ती हैं | मैथिलीशरण गुप्त की सैरंध्री कविता से हमें यह महाभारत युग का उदाहरण देखने को मिलता है जब अज्ञातवास में बदले हुए भेष में दासी बनी द्रोपदी की आबरू लूटने की योजना कीचक ने बनाई थी और किस तरह द्रोपदी ने उसे जवाब दिया था--

“अरे! नराधम, तुझे नहीं लज्जा आती है ?
निश्चय तेरी मृत्यु मुंड पर मंडराती है
मैं अबला हूँ किन्तु न अत्याचार सहूंगी
तुझ दानव के लिए चंडिका भी बनी रहूंगी
मत समझ तू मुझे शशि-सुधा-खल, निज कल्मष राहू की
मैं सिद्ध करूंगी पाशता अपने वामा-बाहू की |”[3]

जहाँ बात किसी की पीड़ा की हो तो हम सभी को यह एहसास जरूर होना चाहिए कि स्त्री-पीड़ा को मिटाने का बीड़ा आज तक किसी ने क्यों नहीं उठाया..? क्यों कोई भी आज तक नारियों की अनेकानेक छोटी-बड़ी पीडाओं को समझ नहीं पाया...? यहाँ तक की स्वयं नारी भी | जैसे वस्त्रों के पीछे घाव छुप जाते हैं उसी तरह शब्दों के पीछे भाव छुप जाते हैं | किन्तु यह भी एक अटल सत्य है कि शब्दों में बहुत ताकत रहती है जो अनदेखे घावों को छुपाकर बात ही बात में चेहरे और आँखों से भावों को दिखा देते हैं | स्त्रियों के हिस्सें में प्रायः यही परम्परा आती है कि दुःख और पीड़ा सह कर भी किसी को नहीं बताना और जिंदगी जीते रहना | परम्परा यानि क्या...? जहाँ असीम वेदना और पीड़ा हो और उसे स्वीकार कर लेने के अलावा कोई मार्ग शेष ना हो तब एक नई परम्परा जन्म लेती है | किन्तु अब...इस पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था को गहराई से जानना आवश्यक हो गया है अन्यथा पुरुष की शक्ति का अहंकार और उसके अंतःकरण का अन्धकार एक दिन सम्पूर्ण समाज को विनाश की ओर ले जायेंगा | असीम वेदना और पीड़ा से युक्त किसी नारी के ये शब्द हमें कितने व्याकुल बना देते हैं– “अरे हाँ अपनी जिंदगी को मैनें जिया ही कब...? घर में पुरुष अहंकार गाल पर थप्पड़ मरता है, मेरा अस्तित्व मिटाने के लिए तो गली में अस्मिता कुचलने वाले दूसरे गाल पर चोट करते हैं |” यह सब जान कर बहुत दुःख होता है मन में विचारों की श्रंखलाए उमड-घुमड़ पड़ती हैं...क्या कभी भी स्त्री मन और उसकी अनगिनत पीडाओं को कोई समझ ही नहीं पायेगा...? क्या इसी तरह इसकी अवस्था बद से बदतर होती जायेगी...? क्या पितृ सत्तात्मक समाज की सुदीर्घ परम्पराएं और पुरुष का मन इतना कठोर और कुंठित हो चुका है...कि इसकी वेदना की टीसों की आवाज़े भी पुरुष नहीं सुन पा रहा है..? क्यों पुरुषों ने अपनी कर्मठता का अनुचित लाभ उठाकर इसे निरुपाय भावनाओं से ग्रसित किया...?

क्यों यह अपने स्वतंत्र वजूद की स्थापना के लिए पुरुषों के विभिन्न प्रकार के शोषण और भेद-विभेद की इस्पाती कठोरता में पिसती जा रही है...? क्यों...आखिर क्यों...?

बीसवी सदी महिला जागरण का युग था | अनेकानेक समाज सुधारकों ने स्त्री की शिक्षा और उसके सामजिक प्रश्नों पर विचार विमर्श कर उसकी अस्मिता और अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त किया था | १९७५ के महिला वर्ष के बाद १९७६ से १९८५ तक और १९८६ से १९९५ तक दो महिला दशक मनाये गए, जिसमे विश्व के सभी देशों ने स्त्री-प्रगति के मार्गों की तलाश प्रारंभ की | अब स्त्री आर्थिक, सामाजिक, राजनितिक, शेक्षणिक व प्रशासनिक सभी क्षेत्रों में अपने अस्तित्व व व्यक्तित्व की छाप सिद्ध की | अब स्त्री को हर कसौटी पर खरा उतरकर पुरुष सत्ता द्वारा किये गए उसके रिड्यूस व्यक्तित्व, अस्मिता और अस्तित्व को फॉर्म में लाना होगा | इन सब बातों के लिए उसमें दृढ़ संकल्प की अत्यंत आवश्यकता है | श्रीमती सुमन कृष्णकांत के शब्दों में–**"नई सदी के प्रारम्भ में महिलाओं के विकास तथा उन्हें अधिकार संपन्न बनाने के क्षेत्र में कुछ कदम उठाए गए हैं | यदि महिलाओं को नई सहस्त्साब्दी का परिवर्तन कारक प्रतिनिधि बनना है तो उन्हें बदलते हुए समय की चुनौतियों को स्वीकार करना होगा तथा इस दिशा में स्वयं को सक्रीय भूमिका निभानी होगी | उन्हें मुख्य धारा में जोड़ने तथा पुरुषों के सामान सक्षम बनने की जरूरत है ताकि वे धैर्यपूर्वक सभी चुनौतियों का मुकाबला कर सके |"**[4] आज यह भी देखने में आता है कि स्त्री सभी मायनों में दिन पर दिन स्वतन्त्रता प्राप्त कर रही है | फिर भी वह अंतर्विरोधों में जी रही है | वह परिवार चाहती है, पुरुष का सहारा चाहती है और साथ ही साथ अपने अस्तित्व व अस्मिता की रक्षा भी चाहती है | वह अपने परिवार का स्तर ऊँचा उठाना चाहती है और इसके लिए वह कठिन से कठिन परिश्रम करने के लिए भी तैयार है | इसीलिए उसकी छवि बदल रही है | वह अब संकुचित सोच की परिधि से बाहर निकल चुकी है और पारंपरिक दास्ताँ की बेड़ियों से मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील है | इस कार्य में मीडिया के हस्तक्षेप से पुरुषों की मानसिकता भी स्त्रियों के लिए संवेदनशील बनी है | इस परिवर्तन को डॉ. मोहम्मद जमील अहमद लिखते हैं–**"आज की जागरूक नारी जटिल परिस्थितियों में पूर्ववर्ती नारियों के समान घुटने टेकने की अपेक्षा अपार बल व शक्ति से उसका निराकरण करती है | आधुनिक ग्रामीण नारी पुरुष की संपत्ति मात्र न बनकर उसकी सहभागिनी बनकर जीवन व्यतीत करना चाहती है | वह यह सिद्ध करना चाहती है कि नारी का भी ह्रदय होता है | वह स्वयं निर्भय हो सकती है | सामाजिक दायित्वों को भलीभांति निभा सकती है | वह इन दायित्वों को निभाते समय अनेक धार्मिक रुढियों का विरोध करती है | वर्तमान समय में समाज द्वारा उस पर होने वाले अत्याचारों का धैर्य से सामना करती है |"**[5] स्त्री मन की पीड़ा को कात्यायनी अपने क्रांतिकारी शब्दों में व्यक्त करती है– **"देह नहीं होती है , एक दिन स्त्री...**

और उलट-पलट जाती है.. सारी दुनिया अचानक..|"[6]

आज के समय में स्त्री के लिए स्त्री साहित्यकारों ने भी स्वयं की और अन्य स्त्रियों की पीड़ा को दूर करने का बीड़ा उठाया है | साहित्यकारों ने नारी को सम्मानित करने हेतु अपनी अनेक विधाओं में इसे स्थान दिया, उसमें खुले रूप में लिख कर समाज में नारी की यथावत स्थिति का चित्रण किया | सिद्ध किया कि समाज में स्त्री और पुरुष दों स्वतंत्र इकाई है, किन्तु फिर भी न जाने क्यों इसे स्वायत्त व्यक्ति न मानकर, प्रथम पंक्ति का व्यक्ति न मानकर इसे मात्र 'अन्या' से 'अनन्या' तक बना दिया | इसी तरह आधुनिक काल में नारी लेखन की अहम् भूमिका रही है | हिंदी की अग्रणी लेखिकाओं में चित्रा मुदगल का नाम महत्वपूर्ण है | इनके कहानी संग्रह–लाक्षागृह, अपनी वापसी, इस

हमाम में, ग्यारह लम्बी कहानियां, जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं, चर्चित कहानियां, मामला आगे बढेगा आगे, जिनावर, लपटें, केचूल, भूख बयान, | इनके उपन्यास–एक जमीं अपनी, आवा, गिलिगडु, | इनका लघु कथा संग्रह–बयान है जो २००४ में प्रकाशित हुआ है | इस संग्रह में कुल २९ कहानियां हैं |

बेटा-बेटी भेद यह एक साम्प्रतिक जीवंत सामजिक समस्या है और माँ-बाप ही इस समस्या को बढ़ाते हैं | 'दूध' कहानी में माँ कहती है–'घर के मर्द दूध पीते हैं' क्योंकि वह मर्द है | एक दिन कहानी में बेटी माँ और दादी की अनुपस्थिति में दूध पिने के लिए लेती है इतने में माँ आ जाती है डर के मारे बेटी के हाथ से गिलास छुट जाती है और दूध जमीन पर गिर जाता है | वह माँ से माफ़ी मांगती है तब माँ कहती है दूध मांग लेती परन्तु दुर्भाग्य से मांग कर भी बेटियों को दूध नहीं मिलता | बेटी अपनी माँ से ऐसा सवाल करती है जिसे सुनकर हम सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं | **"मैं जन्मी तो दूध उतरा था तुम्हारी छातियों में..? हाँ खूब! पर-पर तू कहना क्या चाहती है..? तो मेरे हिस्सें का छातियों का दूध भी क्या तुमने घर के मर्दों को पिला दिया था..?"** [7] 'रिश्ता' लघु कहानी में पुना के अस्पताल में रोगियों की सेवा करने वाली मारथा सिस्टर को प्रस्तुत किया गया है | वह मरीजों को दवा के साथ-साथ स्नेह और ममता भी देती है | नारी के इस ममतामई स्वभाव का परिचय लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से किया है | नारी का स्वभाव हमेशा दयालु होता है | 'बोहनी' लघु कथा में सान्ताक्रुज़ प्लेटफार्म नंबर तीन पर बैठे भिखारी को एक औरत रोजाना पांच या दस रुपये भीख देती है | किन्तु तीन दिन से उसने भीख नहीं दी | जिससे भिखारी वेदना भरे स्वर में कहता है–**"माँ तुम देता तो सब देता, तुम नई देता तो कोई पन नई भीख देता | तुम्हारे हाथ से हर रोज बोहनी होता न, तो शाम तलक पेट भरने भर को मिलजाता है, तीन दिन से भूखा हैं मैं, मेरी माँ |"**[8] 'नाम' लघु कथा में रतिया डोमिन ने अपने बेटे का नाम देवेन्द्र प्रताप सिंह रखा | इसलिए सरपंच ठाकुर रिक्पाल सिंह अपने लठैतों के साथ आकर कहता है आज से इस रांड को ठाकुरायीन कहकर पुकारों क्योंकि ठाकुर की माँ डोमिन कैसे हो सकती है..? इस पर रतिया कहती है–**"मार डालो, खिलादों, डरकर हम सांच के पर नहीं क़तर सकते हैं मालिक | ठाकुर के बेटे का नाम ठाकुरों जैसा न धरे तो क्या...डॉम चमारों वाला धरे ..?"**[9] इस कहानी में लेखिका यह कहना चाहती है कि ठाकुरों को डॉम जाति की स्त्रियों के शरीर चलते हैं किन्तु उसके बच्चों को ठाकुरों का नाम दिया हुआ नहीं चलता | पर निर्भय होकर बिरादरी के सामने रतिया द्वारा यह बात बताने को ही स्त्री विमर्श की सही परिभाषा कहते है |

'डोमिन काकी' कहानी में स्वयं लेखिका के बचपन का किस्सा छुपा हुआ है | बचपन में लेखिका ने एक बार घर की टट्टी और आँगन से लगी नरदवा साफ़ करने जो डोमिन आती है उसे डोमिन कह कर पुकारा तब दादी ने एक तमाचा मारकर कह बता–**"कब सीखेगी मान-ठान, ऐसे बुलाते हैं बड़े-बूढियों को..? रिश्ते में तेरी काकी लगती है काकी | डोमिन काकी कह कर इसे समझी..?"**[10] और जब एक दिन लेखिका से दादी कहती है कि यह अनाज डोमिन काकी को दे दे | तब वह उसे छूकर अनाज देती है तब दादी लेखिका को थप्पड़ लगाती है और कहती है डोमिन को क्यों छुआ..? नन्ही लेखिका के मन में यह बात बैठ गयी कि कोई अपना अगर है तो उसे इज्जत भी दो और उसकी मदद करते वक़्त बड़ों की थप्पड़ भी मिले तो भीं कोई बात नहीं | इसी विषय पर डॉ. मीनाक्षी व्यास कहती है-**"जैसे-जैसे महिला चेतना बढ़ेगी और महिलायें अपने हक के लिए आग्रह करेगी, उन पर प्रहार भी होते रहेंगे |"**[11] 'घर' कहानी में लेखिका ने नारी के एक अलग ही रूप को प्रस्तुत किया है | शिप्रा विधवा है | वह बेटे शुभम और बेटी के साथ रहती है | उसके घर के सामने एक बूढ़ा रोज आकर बैठता है और घर को घूरता रहता है | शिप्रा डर जाती है वह पुलिस को बुलाती है पुलिस पूछताछ

करती है तो बूढ़ा कहता है कि एक ज़माने में उसका भी बेटा-पोता हुआ करता था जो इसी घर में रहते थे | लेकिन अपघात में वे सब मारे गए | इसीलिए मैं इस घर की दीवारों को छूना चाहता हूँ | एक दिन शिप्रा को पता चला कि वह बूढ़ा मर गया है | पुलिस लावारिस लाश समझ कर उसे लेजाने लगती है तब शिप्रा कहती है–"**किसने कहा ये लावारिस है | शुभम इनका पोता है जो दाह संस्कार करेगा और मुखाग्नि देगा अपने दादा को |**"लेखिका ने सर्वहारा वर्ग और शोषित वर्ग ककी नारियों के माध्यम से स्त्री विमर्श प्रस्तुत किया है |

हम अंत में कह सकते है कि वर्षों से गुलाम रही नारी अब मुक्त होने के लिए छटपटा रही है | सदियों से दबाई गयी आवाज़ को आज अनेकानेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी की इस छटपटाहट को, उसकी मुक्ति की कामना को अपने-अपने तरीकों से वाचा दी है | नारी अस्मिता की परिभाषा किसी एक निश्चित वैचारिक दायरे में बांधकर नहीं दी जा सकती है | नारी की अस्मिता उसके अंतर्विरोधों के प्रति बदलाव की प्रतिक है | नारी के स्वत्व की पहचान ही उसकी अस्मिता का प्रकटीकरण है | आज स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करनेवाली नारी वर्ग की संख्या बहुत कम है और उसी की तुलना में अस्मिता को लेकर देखा जा सकता है |

सन्दर्भ :

1. प्रो. प्रतिभा मुदलियार, नागफनी, अंक ३७, अप्रैल-जून २०२१, पृ.०३
2. अमृता प्रीतम–आदि स्मृति
3. मैथिलीशरण गुप्त–सैरंध्री–पृष्ठ संख्या–४
4. सम्पादक–सुमन कृष्णकांत–२१ वीं सदी की ओर–पृष्ठ संख्या–१०
5. डॉ. मोहम्मद जमील अहमद–अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास–ग्रामीण जीवन का चित्रण–पृष्ठ संख्या–२२०
6. कात्यायनी–देह ना होना (कविता से)
7. चित्रा मुदगल–बयान कहानी से -पृष्ठ संख्या–८३
8. वही–पृष्ठ संख्या ५६
9. वही–पृष्ठ संख्या–३८
10. वही–पृष्ठ संख्या-- २
11. डॉ. मीनाक्षी व्यास–नारी चेतना और सामाजिक विधान–पृष्ठ संख्या–११५